

भारत सरकार  
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा  
अतारांकित प्रश्न संख्या 2208  
उत्तर देने की तारीख 09.12.2024

नई राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन

2208. श्री सुदामा प्रसाद :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अंतर्गत प्रस्तावित नए राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (एनएमएम) और मौजूदा राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन के बीच संरचना और प्राधिकार में महत्वपूर्ण अंतरों का व्यौरा क्या है;
- (ख) नया राष्ट्रीय पांडुलिपि प्राधिकरण पांडुलिपियों के परिरक्षण, डिजिटलीकरण और पहुंच में सुधार लाने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों का किस प्रकार उपयोग करेगा;
- (ग) दुर्लभ पांडुलिपियों के संरक्षण और अध्ययन के लिए प्रस्तावित नए राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन के अंतर्गत आबंटित निधियों का व्यौरा क्या है;
- (घ) क्या सरकार ने इस पहल के एक भाग के रूप में पांडुलिपियों का हास, पारंपरिक संरक्षण कौशल की कमी और क्षेत्रीय पांडुलिपि संग्रहों में कमी को दूर करने के लिए उचित उपाय किए हैं; और
- (ङ.) यदि हां, तो तत्संबंधी व्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री  
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

- (क) से (ङ): संस्कृति मंत्रालय ने राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (एनएमएम) की स्थापना 2003 में 10वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान भारतीय पांडुलिपियों को प्रलेखित, संरक्षित और उन तक पहुंच को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की थी। इस स्कीम का विशेषज्ञों की समिति द्वारा मूल्यांकन किया गया जिसने यह अनुशंसा की कि इसकी पहुंच को और अधिक व्यापक

बनाते हुए और मंत्रालय की प्रत्यक्ष निगरानी सहित, इसे जारी रखा जाए। वर्तमान में राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधीन एक इकाई के रूप में कार्य करता है जिसके लिए संगठन को निधियां उपलब्ध कराई जाती हैं। आईजीएनसीए के योगदान से एनएमएम पांडुलिपियों के परिरक्षण और डिजिटलीकरण के लिए तकनीकों का उपयोग करता है। डिजिटलीकृत पांडुलिपियां <https://www.pandulipipatala.nic.in> पर अपलोड की जाती हैं।

पांडुलिपियों के ह्वास की चुनौतियों का समाधान करने के उद्देश्य से, एनएमएम परिरक्षण की भिन्न पद्धतियों का उपयोग करता है जैसे कि पांडुलिपियों का लैमिनेशन, जीर्णोद्धार और विअम्लीकरण। निवारक संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। पांडुलिपि संसाधन केन्द्र (एमआरसी) और पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र (एमसीसी) क्षेत्रीय और विषयगत संग्रह तथा संरक्षण की कमियों का समाधान करते हैं।

\*\*\*\*